



ISSN: 3108-0294

आशा पारस बहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका

अर्द्धवार्षिक सहकर्म-समीक्षित
(PEER- REVIEWED) शोध-पत्रिका

खंड -2, अंक-1, अप्रैल-सितंबर 2026

प्रधान संपादक
प्रो. आशा शुक्ला

संपादक
प्रो. आर.के.शुक्ला

उप-संपादक
डॉ. रामशंकर

प्रबंध संपादक
लव चावड़ीकर

प्रकाशक
आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी
फाउंडेशन, भारत

A93, एमराल्ड पार्क सिटी, एम्स अस्पताल के पास, बागसेवनीया,
भोपाल-462026, मध्य प्रदेश
officeparasfoundation@gmail.com
www.ashaparasfoundation.com



संपादक मण्डल

प्रधान संपादक	संपादक
प्रो. आशा शुक्ला प्रबंध निदेशक, आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी फाउंडेशन, भारत एवं पूर्व कुलगुरु, डॉ. बी. आर. अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महु इंदौर, मध्य प्रदेश ashashukla2006@yahoo.co.in +91 9926310987	प्रो. आर. के. शुक्ला निदेशक, आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी फाउंडेशन, भारत एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, वाणिज्य एवं प्रबंधन विभाग, पं. सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल मध्य प्रदेश dr_ravindrashukla@rediffmail.com +91 9977466514

संपादक मण्डल सदस्य

डॉ. दिवाकर सिंह राजपूत कुलपति, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)	डॉ. मनोज कुमार सक्सेना वरिष्ठ आचार्य (शिक्षा) एवं प्रॉक्टर, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, (हिमाचल प्रदेश)	डॉ. विनोद कुमार मिश्र आचार्य एवं डीन, हिन्दी विभाग, त्रिपुरा विश्वविद्यालय (अगरतला)
डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, (मध्य प्रदेश)	डॉ. श्री गोविंद पांडे आचार्य, शिक्षा शास्त्र विभाग, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, भोपाल केम्पस (मध्य प्रदेश)	डॉ. अमित कुमार जायसवाल आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, बी.एड विभाग, डीन- शिक्षा संकाय, श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय परिसर गोपेश्वर, चमोली (उत्तराखंड)
डॉ. महेश नारायण दीक्षित आचार्य, शिक्षा संकाय (IASE) गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद (गुजरात)	डॉ. महेश शुक्ला पूर्व आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, शासकीय टी. आर. एस. उत्कृष्ट महाविद्यालय, रीवा (मध्य प्रदेश)	डॉ. सुरेन्द्र पाठक आचार्य, मध्यस्थ दर्शन, लोक जागृति विश्वविद्यालय, अहमदाबाद (गुजरात)
डॉ. अंजली अवधिया प्राचार्य, शास. कमला देवी महाविद्यालय, राजनांदगांव (छत्तीसगढ़)	डॉ. भारती शुक्ला सह आचार्य, हवाबाग महाविद्यालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश)	डॉ. मनीषा सक्सेना सह आचार्य, डॉ. बी आर अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महु (मध्य प्रदेश)
डॉ. राजीव जैन निदेशक, प्रबंधन विभाग, टूबा गुप ऑफ इंस्टीट्यूट, भोपाल (मध्य प्रदेश)	डॉ. अजय दुबे पूर्व प्राचार्य, स्वामी राम हिमालयन योग विश्वविद्यालय, देहरादून (उत्तराखंड)	डॉ. बिंदिया तातेर सह आचार्य, मेडि-केप्स विश्वविद्यालय, इंदौर (मध्य प्रदेश)

उप संपादक

डॉ. रामशंकर
 सहायक आचार्य, आई. आई. एम. टी. कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट,
 ग्रेटर नोएडा,
 ramwardha1986@gmail.com
 +91 9890631370

प्रबंध संपादक

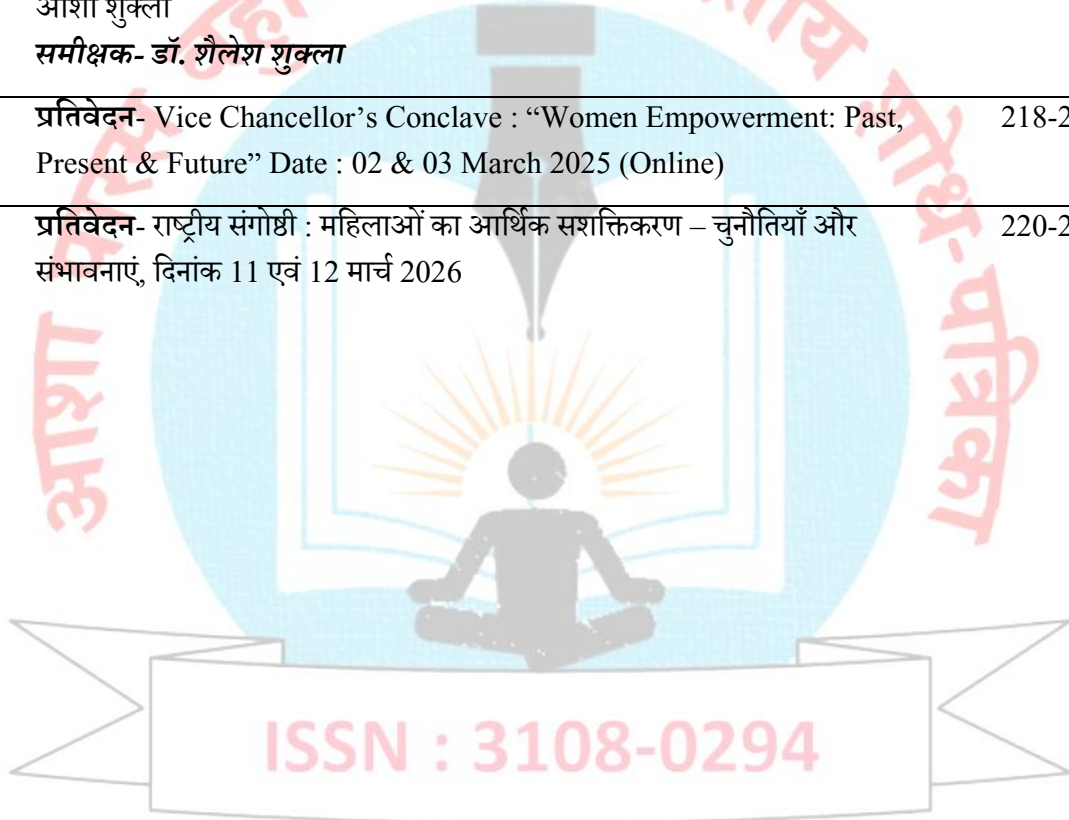
लव चावडीकर
 कार्यकारी प्रबंधक, आशा पारस फॉर पीस एंड हारमनी
 फाउंडेशन, भारत
 officeparasfoundation@gmail.com
 +91 9893950833

नोट:- व्यक्तिगत लेखकों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं और जरूरी नहीं कि वे आशा पारस वहुविषयक भारतीय शोध-पत्रिका/प्रकाशक/संपादक मण्डल को प्रतिबिंबित करते हों।

विषय सूची

क्रम	विषयवस्तु	पृष्ठ क्र
	संपादकीय - प्रो. आशा शुक्ला	
1	तुलसीदास के कृष्ण और सूरदास के राम अवधेश कुमार	1-12
2	जनजातीय समाज एक स्वप्न की तरह क्यों है ? भारती शुक्ला	13-20
3	भारत में महिलाओं का डिजिटल सशक्तिकरण: अवसर और जोखिम गुरपिंदर कुमार	21-36
4	भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा का स्वरूप: गुरुकुल से डिजिटल युग तक जैस्मीन पटनायक एवं हिमांशु शेखर सिंह	37-46
5	कोविड-19 और महिला श्रमिकों का पलायन के दौरान संघर्ष खुशबू सिंह	47-57
6	संत कबीर के काव्य में मूल्य-शिक्षा: समकालीन परिप्रेक्ष्य लव चावड़ीकर	58-67
7	विद्यार्थियों के अधिगम पर शिक्षकों के अवसाद का प्रभाव – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन ममता त्रिपाठी	68-71
8	योग निद्रा का उद्भव एवं स्वास्थ्य संबंधी प्रासंगिकता ममता द्विवेदी	72- 80
9	रामचरितमानस में भक्ति और अध्यात्म का समन्वय : एक दार्शनिक अध्ययन पवन पाठक	81-88
10	विद्यार्थियों के अवसाद एवं रक्षा युक्तियों का अधिगम व्यवहार पर प्रभाव रेखा नामदेव एवं सुनीता बोकड़े	89- 109
11	किशोर विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समृद्धि का उनके व्यवहार विचलन एवं आलोचनात्मक चिंतन पर प्रभाव का अध्ययन श्वेता पुरी, सुनीता बोकड़े एवं के नागमणी	110-139
12	महिला सशक्तिकरण और शिक्षा : आदर्शवाद, भौतिकवाद एवं सह-अस्तित्ववाद की शिक्षा- दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन सुनीता पाठक	140-154
13	विशेष -स्त्री निर्मित कथा साहित्य में महिला उत्पीड़न : अंतरविश्लेषण में उभरते विचार बिन्दु आशा शुक्ला एवं संगीता सक्सेना	155-166

14	आलेख- संत रैदास के काव्य में मूल्य-शिक्षा आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	167-182
15	आलेख- साहित्यकारों की दृष्टि में भारत(प्राचीन काल से आजादी के अमृत महोत्सव तक) विनोद कुमार सिन्हा	183-193
16	साक्षात्कार- समाज और मानव सेवा में मिला जीवन का उद्देश्य- समाज सेवी दयाबाई सर्जना चतुर्वेदी	194-200
17	पुस्तक समीक्षा- लिंग शक्ति गतिशीलता, संपादक- आशा शुक्ला एवं जया फूकन समीक्षक- डॉ. रामशंकर	201-208
18	पुस्तक समीक्षा- डिजिटल युग में हिंदी पत्रकारिता : संभावनाएँ और चुनौतियाँ, संपादक- प्रो. आशा शुक्ला समीक्षक- डॉ. शैलेश शुक्ला	209-217
19	प्रतिवेदन- Vice Chancellor's Conclave : "Women Empowerment: Past, Present & Future" Date : 02 & 03 March 2025 (Online)	218-219
20	प्रतिवेदन- राष्ट्रीय संगोष्ठी : महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण – चुनौतियाँ और संभावनाएँ, दिनांक 11 एवं 12 मार्च 2026	220-221



संपादकीय

एक शोधपरक हिंदी जर्नल की आवश्यकता को यदि केवल भाषा के आग्रह के रूप में देखा जाए, तो यह उसके मर्म को छोटा करना होगा। वास्तव में यह प्रश्न भाषा का नहीं, बल्कि ज्ञान की सत्ता, उसकी दिशा और उसके वितरण का है। हिंदी पट्टी के शोधार्थी की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि वह चिंतन अपनी मातृभाषा में करता है, अपने परिवेश को अपनी बोली में महसूस करता है, किंतु जब उसे उस चिंतन को प्रमाणिक सिद्ध करना होता है, तो उसे एक विजातीय भाषा का आवरण ओढ़ना पड़ता है। इस भाषांतरण में केवल शब्द नहीं बदलते, विचार की आत्मा भी क्षत-विक्षत हो जाती है। साहित्य, दर्शन, इतिहास, समाजशास्त्र, लोक-परंपरा और जनजातीय ज्ञान जैसे विषयों का तो प्राण ही हिंदी और उसकी सहचर बोलियों में बसता है, अंग्रेजी में उनका अनुवाद करना मानो नदी को बोटल में भरने जैसा है।

आज देश के विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले लगभग दो-तिहाई विद्यार्थी हिंदी माध्यम की पृष्ठभूमि से आते हैं, जबकि वैश्विक मानकों पर खरे उतरने वाले शोध जर्नलों में पचानवे प्रतिशत से अधिक केवल अंग्रेजी में हैं। इस असंतुलन ने ज्ञान का एक नया उपनिवेश बना दिया है। स्थिति यह बन गई है कि मालवा के जल-संरक्षण पर, बुंदेलखंड की लोक-कथाओं पर या बस्तर के आदिवासी कृषि-बोध पर शोध करने वाला शोधार्थी जब अपना शोध अंग्रेजी में प्रकाशित करता है, तो वह शोध उसी धरती के लोगों के लिए अपठनीय हो जाता है, जिनके जीवन से वह उपजा है। ज्ञान का प्रवाह उल्टा हो गया है, वह समाज से निकलकर प्रयोगशाला में जा तो रहा है, पर प्रयोगशाला से समाज में लौट नहीं रहा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने इसी विसंगति को पहचाना है, इसीलिए वह भारतीय भाषाओं में मौलिक शोध की वकालत करती है, और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भी अब भारतीय भाषाओं के शोध प्रकाशनों को अकादमिक उन्नति के लिए मान्यता दे रहा है। ऐसे में एक अंतरराष्ट्रीय स्तर का, कठोर समकक्ष समीक्षा यानी पीयर रिव्यूड ISSN प्राप्त हिंदी शोध जर्नल केवल विकल्प नहीं, बल्कि शैक्षणिक न्याय की पहली शर्त बन गया है।

इसका लाभ त्रि-आयामी है और अत्यंत गहरा है। पहला लाभ शोधार्थी के स्वयं के बौद्धिक विकास का है। जब वह अपनी भाषा में लिखता है, तो भाषा की चिंता से मुक्त होकर वह विचार की चिंता करता है, उसका तर्क अधिक पैना होता है, उसका विश्लेषण अधिक प्रामाणिक होता है। उसे अपनी ही भाषा में पूर्ववर्ती शोध का एक समृद्ध भंडार मिलता है और साथ ही नेट, जे. आर. एफ., पीएच. डी. तथा उच्च शिक्षा में प्रवेश के लिए आवश्यक प्रकाशन की अनिवार्यता भी पूरी होती है, वह हीनभावना से मुक्त होता है। दूसरा लाभ समाज का है। हिंदी में प्रकाशित शोध ही ज्ञान के उस बंद चक्र को तोड़ सकता है। जब एक शिक्षक, एक पत्रकार, एक ग्राम प्रधान या एक खेत में काम करने वाला किसान अपने ही क्षेत्र पर हुए शोध को अपनी भाषा में पढ़ेगा, तभी वह शोध नीति में, पाठ्यक्रम में और व्यवहार में बदलेगा। यही वास्तविक अर्थों में लैब टू लैंड है। तीसरा और सबसे दूरगामी लाभ स्वयं हिंदी भाषा का है। कोई भी भाषा तब तक ज्ञान-भाषा नहीं बनती, जब तक उसमें ज्ञान का सृजन न हो। अंग्रेजी आज ज्ञान-भाषा इसलिए है क्योंकि उसने विज्ञान, तकनीक और समाज-विज्ञान के विमर्श को अपने भीतर रचा है। जब हिंदी में गंभीर समाजशास्त्रीय, आर्थिक और वैज्ञानिक शोध प्रकाशित होंगे, तो हिंदी में नई पारिभाषिक शब्दावली गढ़ी जाएगी, नई सैद्धांतिक अवधारणाएं जन्म लेंगी और वह केवल साहित्य की नहीं, बल्कि समकालीन ज्ञान की भी वाहक

बनेगी। अंततः हिंदी का शोध जर्नल किसी पर किया गया अनुग्रह नहीं है, वह एक अधिकार का पुनर्स्थापन है। वह हिंदी भाषी शोधार्थी को यह विश्वास देता है कि विश्व-नागरिक बनने के लिए उसे अपनी जड़ से उखड़ना आवश्यक नहीं है, वह अपनी जड़ों में गहरे उतरकर ही विश्वव्यापी हो सकता है।

इस अंक में प्रकाशित सभी शोध पत्रों के प्रदाता शोध सहयोगियों को और संपादक मंडल को धन्यवाद।



आशा शुक्ला
(प्रधान संपादक)

